रविवार 16 फरवरी, 2020

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठः मरकुस 12 : 30

"सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 84 : 2, 5, 7, 9, 11, 12**

2 मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला; मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे॥
5 क्या ही धन्य है, वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता है, और वे जिन को सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है।
7 वे बल पर बल पाते जाते हैं; उन में से हर एक जन सिय्योन में परमेश्वर को अपना मुंह दिखाएगा॥
9 हे परमेश्वर, हे हमारी ढ़ाल, दृष्टि कर; और अपने अभिषिक्ति का मुख देख!
11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं; उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा।
12 हे सेनाओं के यहोवा, क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ पर भरोसा रखता है!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 55 : 3, 6, 7

3 कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा।
6 जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो;

7 दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।

2. नीतिवचन 29 : 25, 26

25 मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है।
26 हाकिम से भेंट करना बहुत लोग चाहते हैं, परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा की करता है।

3. उत्पत्ति 27 : 41

41 ऐसाव ने तो याकूब से अपने पिता के दिए हुए आशीर्वाद के कारण बैर रखा; सो उसने सोचा, कि मेरे पिता के अन्तकाल का दिन निकट है, फिर मैं अपने भाई याकूब को घात करूंगा।

4. उत्पत्ति 32 : 1, 2 (*से* :), 3, 6, 7 (*से* :), 9, 10 (*से 1st* ;), 11, 24-31

1 याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले।
2 उन को देखते ही याकूब ने कहा, यह तो परमेश्वर का दल है॥
3 तब याकूब ने सेईर देश में, अर्थात एदोम देश में, अपने भाई ऐसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिए।
6 वे दूत याकूब के पास लौट के कहने लगे, हम तेरे भाई ऐसाव के पास गए थे, और वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरूष संग लिये हुए चला आता है।
7 तब याकूब निपट डर गया, और संकट में पड़ा:
9 फिर याकूब ने कहा, हे यहोवा, हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर, तू ने तो मुझ से कहा, कि अपने देश और जन्म भूमि में लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूंगा:
10 तू ने जो जो काम अपनी करूणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं, कि मैं जो अपनी छड़ी ही ले कर इस यरदन नदी के पार उतर आया, सो अब मेरे दो दल हो गए हैं, तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं।
11 मेरी विनती सुन कर मुझे मेरे भाई ऐसाव के हाथ से बचा: मैं तो उससे डरता हूं, कहीं ऐसा ने हो कि वह आकर मुझे और मां समेत लड़कों को भी मार डाले।
24 और याकूब आप अकेला रह गया; तब कोई पुरूष आकर पह फटने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा।
25 जब उसने देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता, तब उसकी जांघ की नस को छूआ; सो याकूब की जांघ की नस उससे मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई।
26 तब उसने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है; याकूब ने कहा जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा।

27 और उसने याकूब से पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने कहा याकूब।
28 उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध कर के प्रबल हुआ है।
29 याकूब ने कहा, मैं बिनती करता हूं, मुझे अपना नाम बता। उसने कहा, तू मेरा नाम क्यों पूछता है? तब उसने उसको वहीं आशीर्वाद दिया।
30 तब याकूब ने यह कह कर उस स्थान का नाम पनीएल रखा: कि परमेश्वर को आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।
31 पनूएल के पास से चलते चलते सूर्य उदय हो गया, और वह जांघ से लंगड़ाता था।

5. उत्पत्ति 33 : 1 (*से 1st* .), 4

1 और याकूब ने आंखें उठा कर यह देखा, कि ऐसाव चार सौ पुरूष संग लिये हुए चला जाता है।
4 तब ऐसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगा कर, गले से लिपट कर चूमा: फिर वे दोनों रो पड़े।

6. 2 इतिहास 7 : 14

14 तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।

7. गलातियों 5 : 2 (*से 2nd* ,), 5, 7-10, 13, 14

2 देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं।
5 क्योंकि आत्मा के कारण, हम विश्वास से, आशा की हुई धामिर्कता की बाट जोहते हैं।
7 तुम तो भली भांति दौड रहे थे, अब किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो।
8 ऐसी सीख तुम्हारे बुलाने वाले की ओर से नहीं।
9 थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है।
10 मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं, कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा।
13 हे भाइयों, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।
14 क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

8. I कुरिन्थियों 1 : 1 (*से 2nd* ,), 3-5, 10, 26, 29-31

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया।
3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥
4 मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूं, इसलिये कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ।
5 कि उस में होकर तुम हर बात में अर्थात सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए।
10 हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।
26 हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए।
29 ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने घमण्ड न करने पाए।
30 परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।
31 ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 58 : 12 *केवल*

आत्मा में नैतिक स्वतंत्रता है।

2. 477 : 22-26

आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है।

3. 70 : 13-9

प्रश्न हैं: भगवान की पहचान क्या हैं? जीवात्मा क्या है? क्या जीवन या आत्मा का गठन की गई चीज में होता है?

कुछ भी वास्तविक और शाश्वत नहीं है, — कुछ भी आत्मा नहीं है, - भगवान और उनके विचार को छोड़कर। बुराई की कोई वास्तविकता नहीं है। यह न तो व्यक्ति, स्थान, न ही चीज है, लेकिन केवल एक विश्वास है, भौतिक अर्थ का भ्रम है।

सभी वास्तविकता की पहचान या विचार हमेशा के लिए जारी है; लेकिन आत्मा, या सभी का दिव्य सिद्धांत, आत्मा के निर्माण में नहीं है। जीवात्मा आत्मा, ईश्वर का पर्याय है, परिमित रूप से बाहर का रचनात्मक, शासी, अनंत सिद्धांत, जो केवल प्रतिबिंबित होता है।

4. 300 : 23 *केवल*, 31-4

आत्मा ईश्वर है, जीवात्मा; इसलिए जीवात्मा पदार्थ में नहीं है। ... ईश्वर केवल उसी में प्रगट होता है जो जीवन, सत्य, प्रेम, - परावर्तित को दर्शाता है, जो ईश्वर की विशेषताओं और शक्ति को प्रकट करता है, यहां तक कि जैसे कि मानव समानता दर्पण पर फेंकी जाती है, दर्पण के सामने व्यक्ति के रंग, रूप और क्रिया को दोहराता है ।

5. 308 : 14-28

आत्मा से प्रेरित पितृपुरुषों ने सत्य की आवाज सुनी, और भगवान के साथ सचेत रूप से बात की जैसे कि आदमी आदमी के साथ बात करता है।

जैकब अकेला था, त्रुटि के साथ कुश्ती, - जीवन, पदार्थ और बुद्धिमत्ता की एक नश्वर भावना से जूझते हुए, अपने झूठे सुख और पीड़ा के साथ अस्तित्व के रूप में, - जब एक दूत, सत्य और प्रेम का एक संदेश, उसे दिखाई दिया और मुस्कुराया पाप, या शक्ति, उसकी त्रुटि की, जब तक कि उसने इसकी असत्यता को नहीं देखा; और सत्य, इस प्रकार समझा जा रहा है, उसे दिव्य विज्ञान के इस पेनेल में आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की। तब आध्यात्मिक प्रचारक ने कहा: ""मुझे जाने दे, क्योंकि भोर हुआ चाहता है;" मतलब, सत्य और प्रेम का प्रकाश तुम्हारे ऊपर है। लेकिन पितृसत्ता, उनकी त्रुटि और उनकी मदद की आवश्यकता को मानते हुए, इस शानदार प्रकाश पर अपनी पकड़ तब तक ढीली नहीं की जब तक कि उनका स्वभाव बदल नहीं गया।

6. 309 : 7-12

इस प्रकार जैकब के संघर्ष का परिणाम सामने आया। उन्होंने आत्मा की आध्यात्मिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति के साथ भौतिक त्रुटि पर विजय प्राप्त की थी। इससे आदमी बदल गया। उन्हें अब याकूब नहीं कहा जाता

था, लेकिन इज़राइल, - भगवान का एक राजकुमार, या भगवान का एक सैनिक, जिसने एक अच्छी लड़ाई लड़ी थी।

7. 481 : 28-32

जीवात्मा मनुष्य का दिव्य सिद्धांत है और कभी पाप नहीं करता, - इसलिए जीवात्मा की अमरता है। विज्ञान में हम सीखते हैं कि यह भौतिक अर्थ है, न कि जो पाप है; और यह पाया जाएगा कि यह पाप का बोध है जो खो गया है, और पापपूर्ण पाप नहीं है।

8. 482 : 6-12

शब्द देवता का उचित उपयोग हमेशा ईश्वर शब्द को प्रतिस्थापित करके प्राप्त किया जा सकता है, जहां बहुत अधिक अर्थ की आवश्यकता होती है। अन्य मामलों में, शब्द का उपयोग करें, और आपके पास वैज्ञानिक संकेत होगा। क्राइस्टियन साइंस में इस्तेमाल के रूप में, जीवात्मा आत्मा या ईश्वर का पर्याय है; लेकिन विज्ञान से बाहर, जीवात्मा भौतिक अनुभूति के साथ समान है।

9. 89 : 20-24

आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देता है जब इंद्रियाँ चुप हो जाती हैं। हम जितना करते हैं उससे कहीं अधिक हम सभी सक्षम हैं। आत्मा का प्रभाव या क्रिया एक स्वतंत्रता प्रदान करती है, जो कि अविवेक की घटनाओं और असभ्य होंठों के उत्साह की व्याख्या करती है।

10. 273 : 10-20

दिव्य विज्ञान भौतिक इंद्रियों की झूठी गवाही को उलट देता है, और इस प्रकार त्रुटि की नींव टूट जाती है। इसलिए विज्ञान और इंद्रियों के बीच की दुश्मनी, और समझ की त्रुटियों को समाप्त करने तक सही समझ प्राप्त करने की असंभवता।

सामग्री और चिकित्सा विज्ञान के तथाकथित कानूनों ने नश्वर को कभी भी पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाया है। आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है। इसलिए होने के सत्य को समझने का महत्व, जो आध्यात्मिक अस्तित्व के नियमों को प्रकट करता है।

11. 323 : 19-24

जब बीमार या पापी अपनी आवश्यकता को महसूस करने के लिए जागते हैं, तो वे दिव्य विज्ञान के प्रति ग्रहणशील होंगे, जो जीवात्मा की ओर और भौतिक अर्थ से दूर, शरीर से विचार को हटाता है, और यहां तक कि मन को भी चिंतन के स्तर तक बढ़ा देता है। कुछ बात बीमारी या पाप से बेहतर है।

12. 390 : 4-11

हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि जीवन आत्मनिर्भर है और हमें आत्मा के सदा के सामंजस्य से इनकार नहीं करना चाहिए, सिर्फ इसलिए कि, नश्वर इंद्रियों के लिए, प्रतीत होता है कलह। यह ईश्वर की हमारी अज्ञानता है, ईश्वरीय सिद्धांत, जो स्पष्ट कलह उत्पन्न करता है, और उसके सामंजस्य की सही समझ।सत्य हम सभी को आत्मा के सुख के लिए सुखों और दुखों के आदान-प्रदान के लिए मजबूर करेगा।

13. 322 : 3-13

जब एक सामग्री से आध्यात्मिक आधार पर जीवन और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण को बदलते हैं, हम जीवन की वास्तविकता प्राप्त करेंगे, आत्मा का नियंत्रण और हम अपने ईश्वरीय सिद्धांत में ईसाई धर्म या सत्य का अनुभव करेंगे। यह सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी प्राप्त होने से पहले चरमोत्कर्ष होना चाहिए और उसकी क्षमताओं का पता चला। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है - दिव्य विज्ञान की इस मान्यता के आने से पहले पूरा होने वाले अपार कार्य के मद्देनजर - अपने विचारों को दिव्य सिद्धांत की ओर मोड़ने के लिए, कि परिमित विश्वास अपनी त्रुटि को त्यागने के लिए तैयार हो सकता है।

14. 125 : 2-20

अब मानव शरीर में कार्बनिक और कार्यात्मक स्वास्थ्य के लिए सबसे अच्छी स्थिति क्या मानी जाती है, वह अब स्वास्थ्य के लिए अपरिहार्य नहीं है। नैतिक स्थितियां हमेशा सामंजस्यपूर्ण और स्वास्थ्य देने वाली पाई जाएंगी। न तो जैविक निष्क्रियता और न ही अधिकता भगवान के नियंत्रण से परे है; और मनुष्य को नश्वर विचार बदलने के लिए सामान्य और स्वाभाविक पाया जाएगा, और इसलिए उसकी अभिव्यक्तियों में अधिक सामंजस्यपूर्ण रूप से वह पहले की अवस्थाओं में था जिसे मानव विश्वास ने बनाया और मंजूरी दी थी।

जैसे-जैसे मानव विचार एक अवस्था से दूसरे चरण में बदलता है, दर्द और दर्द रहितता, दु:ख और आनन्द, - भय से आशा और विश्वास से समझ तक, - दृश्य अभिव्यक्ति अंतिम रूप से मनुष्य द्वारा शासित होगी, भौतिक अर्थ से नहीं। भगवान की सरकार को दर्शाते हुए, मनुष्य स्व-शासित है। जब दिव्य आत्मा के अधीन होते हैं, तो मनुष्य को पाप या मृत्यु से नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, इस प्रकार स्वास्थ्य के नियमों के बारे में हमारी सामग्री सिद्ध होती है।

15. 590 : 1-3

स्वर्ग के राज्य। दिव्य विज्ञान में सामंजस्य की प्रबलता; अनियंत्रित, शाश्वत और सर्वशक्तिमान मन के दायरे; आत्मा का वातावरण, जहाँ जीवाश्म सर्वोच्च है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6